राज्य अध्याय 24

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने के लिए प्रार्थना करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) **(शांत समय)** **भजन संहिता 71,73,78 और 82**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 71,73,78 और 82) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(रोमियों में प्रमुख वचन)*** **रोमियों के प्रमुख वचनों की समीक्षा करें**

दो-दो करके रोमियों की आखरी पाँच याद किये हुए प्रमुख वचनों का ***पुनरावलोकन*** करें।
(6) रोमियों 4:5। परन्तु जो काम नहीं करता वरन् भक्तिहीन के धर्मी ठहरानेवाले पर विश्वास करता है, उसका विश्वास उसके लिये धार्मिकता गिना जाता है।
(7) रोमियों 5:1-2अ। क्योंकि जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें, जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक जिसमें हम बनें हैं, हमारी पहुँच भी हुई, और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें।
(8) रोमियों 5:3-4। केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जानकर कि क्लेश से धीरज, और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है।
(9) रोमियों 6:13। और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिये पाप को सौंपो, पर अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धार्मिकता के हथियार होने के लिये परमेश्वर को सौंपो।
(10) रोमियों 6:23। क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह में अनन्त जीवन है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों की पत्री)*** **रोमियों 6:12-23**

परिचय। अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें **रोमियों 6:12-23** साथ में।

रोमियों 6:1-10 में बताया गया है कि "क्या विश्वास करना है", जबकि रोमियों 6:11-16 में सिखाया गया है कि "कैसे जीना है"।
रोमियों 6:17-23 पहले से की गई उन्नति के संबंध में दिया गया प्रोत्साहन है। यह अध्याय मसीहियों के निर्माण के अच्छे क्रम का एक उदाहरण हैः अर्थात दृढ़ विश्वास, लगातार आवेदन और दृढ़ता के लिए प्रोत्साहन।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिल कर रोमियों 6:12-23 तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?
लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार करें या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखेंः हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

6:12-15

खोज 1. **पौलुस ने मसीहियों को समझाया की अब यह उनकी जिम्मेदारी है कि वे अन्यजातियों के समान अधर्म और अपवित्र जीवन न जीएँ, जैसे कि वे अन्यजातियां स्वभाव से और झूठे शिक्षक, और जैसे रोम में रहने वाले (एंटीनोमियंस) अर्थात अनुग्रह पर विश्वास न करने वाले लोग सिखाते हैं।**

(1) वह पुराने स्वभाव व पापी स्वभाव को नया बनाता है।

- रोमियों 6:1-11, पौलुस कहता है कि उसने पहले ही "पुराने मनुष्त्व" (पुराने स्वभाव या पुराने पापी स्वभाव की सारी शक्तियों को) दूर कर दिया है (रोमियों 6:6)।
- रोमियों 6:12-23 में वह मसीहियों को प्रोत्साहित करता है कि उन्हें अब 'पाप' की व्यवस्था का पालन करने की कोई जरूरत नहीं है (नश्वर देह में शारीरिक अभिलाषाओं को पूरा करने की, जो आज भी उनके नये मनुष्यत्व में पायी जाती हैं) (रोमियों 6:12)।

रोमियों 6:12-13 मसीहियों को अपने नश्वर शरीर पर पाप को राज्य नहीं करने देना चाहिए। यह मसीहियों की एक व्यक्तिगत जिम्मेदारी है कि वे अपने पापी स्वभाव के अनुसार जीवन नहीं, वरन् अपने नये मनुष्यत्व के अनुसार जीवन जीएं (गलातियों 5:16-18)।

इसके बजाय मसीहियों को अपने शरीर के अंगों को (उनके मन, आंखों, कानों, उनके मुंह, पैरों इत्यादि को) "धार्मिकता के हथियार" होने के लिए सौंपना चाहिए (रोमियों 6:13)। हालांकि पापी

स्वभाव पहले की तरह ही नया जन्म पाये हुए मसीहियों में बना रहता है, लेकिन उनकी उकसाने वाले पाप की शक्ति का नाश हो चुका है! मसीही वैध रूप से "पाप से आजाद"[1] हो गये हैं (रोमियों 6:7), अर्थात् वे *हमेशा के लिए* दोष भावना, अशुद्धता और पाप की शक्ति से स्वतन्त्र हो गये हैं। नया जन्म पाये हुए मसीहियों में पाप का स्वभाव पहले ही निष्क्रिय हो चुका है। परमेश्वर अब मसीहियों के द्वारा न्याय कर रहे हैं "जिन्होनें देह की क्रियाओं को आत्मा के द्वारा मार दिया है" और जो पवित्र आत्मा की शक्ति में नया और पवित्र जीवन व्यतीत कर रहे हैं (रोमियों 8:13)। इस तरह से मसीही लोगों को यह योग्यता प्रदान की गयी है कि वह पापी अभिलाषाओं का सामना करके अपने आपको नये और पवित्र जीवन के लिए समर्पित कर सके।

(2) व्यवस्था या अनुग्रह के अधीन रहना।

रोमियों 6:14-15 से हमें शिक्षा मिलती है कि मसीहियों को "व्यवस्था के अधीन" जीवन व्यतीत नहीं करना चाहिए। पौलुस व्यवस्था और अनुग्रह के बीच संबंध के बारे में सिखाता है। वह मसीहियों को उनकी अशुद्ध अभिलाषाओं से बचने और उनका विरोध करने के लिए प्रोत्साहित करता है जिससे वे "अनुग्रह के अधीन" जीवन व्यतीत कर सकें (अर्थात "आत्मा के अनुसार जीवन बिता सकें", गलातियों 5:16-26)।

- बहुत से लोग आज भी "व्यवस्था के अधीन" जीवन व्यतीत कर रहे हैं, अर्थात् वे अपनी शक्ति से उद्धार पाने और अपने व्यवस्था के कामों (यहूदियों की तोरह,[2] मसीहियों के द्वारा बनाये गये कुछ नियमों और मुसलमानों[3] की शरिया का) परम्पराओं का पालन करके परमेश्वर को प्रसन्न करने का प्रयास कर रहे हैं। बाइबल कहती है कि जो लोग अपने आप को व्यवस्था के कामों के बल पर धर्मी ठहराने का प्रयास करते हैं, वे असफल होगें! बाइबल कहती है कि यहूदियों, व्यवस्था का पालन करने वाले मसीही और मुसलमान न तो धर्मी हैं और न ही पवित्र हैं। वे नया, धर्मी और पवित्र जीवन इसलिए नहीं जी पाते हैं क्योंकि वे अपने बल से ऐसा करने का प्रयास करते हैं।
- लेकिन जो 'अनुग्रह के अधीन' जीवन व्यतीत कर रहे हैं वे यीशु मसीह में विश्वास करने के कारण परमेश्वर के अनुग्रह से बचाये गये हैं। वे न केवल व्यवस्था के अनुसार धर्मी ठहरे हैं, वरन् वे पवित्र भी हैं। बाइबल कहती है कि इस प्रकार के मसीही लोग कभी भी पाप में जीवन नहीं बिता सकते। हो सकता है कि उनसे पुनः पाप हो जाए, लेकिन पाप में *न* तो जीना *चाहते हैं, न* जी *सकते हैं* और *न ही जीएंगें* (1यूहन्ना 3:6-9)। वे अपने पापों से पश्चाताप करेगें, अपने पापों का अंगीकार करेगें और लगातार उन पापों को सामना करने के

---

[1]ग्रीक : हर एक जन जो विश्वास करता है(अपूर्ण वर्तमान काल) , वह *हमेशा के लिए* (सामान्य भूतकाल)उन सारी चीजों से स्वतन्त्र हो जाता है (अपूर्ण वर्तमान काल), जिनसे वह मूसा की व्यवस्था से स्वतन्त्र नहीं (सामान्य भूतकाल) हो पाया था (प्रेरितों के काम 13:38-39)। इस तरह से रोमियों 6:7 के अनुसार "वह सदा के लिए (दोष, अशुद्धता और पापों की शक्ति से) पापों से स्वतन्त्र होकर (Greek: dedikaiótai (perfect tense) apo tés hamartias. तथा धर्मी और निर्दोष और स्वतंत्र घोषित किया गया है।

[2] व्यवस्था के कामों में(यहूदियों की तोरह में) (ई.पू 1444 मे पहल विद्यमान थी) निम्न बाते शामिल होती हैः आपको यह विश्वास करना है कि परमेश्वर एक है(व्यवस्थाविवरण 6:4) ; आपको दिन में तीन बार प्रार्थना करनी है (दानिय्येल 6:11); आपको वर्ष में चार बार(ज़र्कयाह 8:19) और सप्ताह में दो बार (लूका 18:12) उपवास करना है; आपके अपने धर्म के अनुसार अपनी कमाई का दशमाशं देना है (मलाकी 3:10); आपको वर्ष में तीन बार यरुशलेम की तीर्थ यात्रा पर जाना है (व्यवस्था 16:16); इसके अलावा भी अन्य महत्वपूर्ण नियम हैंः लड़कों का खतना कराना जरूरी है (लैवव्यवस्था 12:3) और स्त्रियों को कुछ समय के लिए अशुद्ध और अपवित्र माना जाता है (लैवव्यवस्था 12:4-5); आपको शनिवार के दिन सबत को मानना है (निर्गमन 12:3); आपको सूअर का मांस नहीं खाना है(व्यवस्था विवरण 14:8) और महिलाओं को केवल महिलाओं की ही पोशाकें पहिननी है (व्यवस्थाविवरण 22:5)।

[3] व्यवस्था के कार्य (मुस्लिमों की शरिया) (722ई.प.) (लगभग 2000 वर्ष के बाद) जिसमें निम्नलिखित बातें शामिल हैंः तुम्हें यह विश्वास करना है कि खुदा एक है; तुम्हें दिन में पांच बार नमाज़ पढ़नी है; तुम्हें हर वर्ष एक महीने के रोज़े रखने हैं; तुम्हें अपने मजहब के हिसाब से खुदा के कामों के लिए अपनी कमाई का चालीस प्रतिशत दान देना है; और आपको अपने जीवन में एक बार हज़ करने के लिए मक्का पर जरूर से जाना है। इसके अलावा भी अन्य महत्वपूर्ण नियम इस प्रकार से हैंः तुम्हारा खत्ना जरूर हो, तुम्हें जुम्में की सभा में शरीक होना है; आपको सूअर का मीट नहीं खाना है और महिलाएं केवल महिलाओं के वस्त्र ही पहिन सकती हैं। यह स्पष्ट है कि इस्लाम की शरिया में यहूदियों की व्यवस्था तोरह का ही अनुसरण किया गया है।

लिए परमेश्वर से क्षमा और अनुग्रह प्राप्त करते रहेगें! अतः नया, धार्मिक और पवित्र जीवन लगातार जीने के लिए मसीहियों को परमेश्वर के अनुग्रह का आनन्द उठाना चाहिए और उसके अनुग्रह का उपयोग करना चाहिए (इब्रानियों 12:14-15)! विश्वास के द्वारा लगातार परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने के द्वारा वे पाप के स्वभाव का विरोध करना *चाहते हैं,* कर *सकते हैं* और वे *करेगें* तथा नया, धार्मिक और पवित्र जीवन व्यतीत *करेगें।* पापी स्वभाव तो उनके भीतर लगातार बना रहता है, लेकिन परमेश्वर के अनुग्रह में निर्भर होने के कारण, पापी स्वभाव उनके मसीही जीवन पर प्रभुता नहीं कर पाता (रोमियों 6:14)

- 15 वें वचन में, पौलुस कहता है कि विश्वास से अनुग्रह के द्वारा धर्मी ठहराये जाने की शिक्षा किसी भी मसीही जन को परमेश्वर के नियमों (दस आज्ञाओं) को अस्वीकार करने और लगातार दण्डाभाव के साथ पाप करने की अनुमति प्रदान नहीं करती है। हालांकि व्यवस्था के मानने से कोई मसीही जन धर्मी नहीं ठहराया जाता, उन्हें यह दिखाने के लिए कि मसीही जीवन कैसे जिया जाता है नैतिक शिक्षाओं को आवश्यकता पड़ती हैं।(अध्याय 7)

6:16-23

खोज 2. **पौलुस मसीहियों को उत्साहित करते हुए कहता है कि उनकी यह जिम्मेदारी है कि वे एक धार्मिक और पवित्र जीवन व्यतीत करें।**

मसीहियों को अब भविष्य में अपने पापी स्वभाव का या उनके पापी स्वभाव से जुड़े कामों का गुलाम बनकर रहने की आवश्यकता नहीं है। इसकी बजाय मसीहियों को धार्मिकता के अधीन रहना है, अर्थात उन्हें धार्मिक और पवित्र स्थिति के प्रति समर्पित रहना है उसी के अनुसार जीवन बिताना है और उसी अवस्था में बने रहते हुए धार्मिक और पवित्र कामों को करना है। जबकि यूहन्ना 15:15 और गलातियों 5:1 यह सिखाता हैं कि केवल मसीह के अधीन होने से हमें सच्ची आज़ादी प्राप्त होती है, पौलुस इस सम्बन्ध में हमें दास और उसके स्वामी के बीच की दो तस्वीरों की रचना करते हुए बताते हैं कि मसीही की वास्तविक अवस्था क्या है।

(1) पापी स्वामी के या धर्मी स्वामी के अधीन रहना।

मन परिवर्तन होने से पहले, मसीही लोगों ने स्वेच्छा से अपने पुराने ईश्वर के अधीन रहने व जीवन बिताने का निर्णय लिया था, अर्थात, "पाप के अधीन" अर्थात पापी स्वभाव जिसमें अनाज्ञाकारिता भी शामिल थी। "पाप" ने उन पर इतनी शक्तिशाली ढंग से प्रभुता कर रखी थी, कि वे कुछ भी भला काम (परमेश्वर की दृष्टि में) नहीं कर पा रहे थे, वरन् वे केवल "बुराई" ही कर रहे थे। पाप के अधीन जीवन बिताने का परिणाम यह हुआ कि वे "आत्मिक तौर पर मर गये" (इफिसियों 2:1), वे "शारीरिक तौर पर मरेगें" (इब्रानियों 9:27) और उसके बाद वे "अनन्त मृत्यु"(नरक) के भागीदार होगें (प्रकाशितवाक्य 21:8)।

लेकिन जब उनका मन परिवर्तन हुआ, तो मसीहियों ने अपना जीवन अपने नये प्रभु अर्थात् "धार्मिकता" के अधीन कर दिया, जिसमें आज्ञाकारिता प्रगट करना शामिल था। यहां पर "धार्मिकता" का अर्थ हर एक पहलू में धार्मिकता है और जिसका वास्तविक अर्थ हर दृष्टिकोण से छुटकारा है (रोमियों 5:17)। "धार्मिकता" ऐसा शक्तिशाली प्रभु है कि मसीही लोग हर एक "भली" (परमेश्वर की दृष्टि में) आज्ञा का पालन कर सकते हैं। धार्मिकता के अनुसार जीवन व्यतीत करने का परिणाम यह

होता है कि मसीही व्यक्ति "आत्मिक तौर पर जीवित रहता है" (इफिसियों 2:4-10), वह मसीह के दूसरे आगमन पर "शारीरिक रूप से मृतकों में से जीवित होगा" और उस पर कोई "दण्ड की आज्ञा नहीं होगी" (नरक कुण्ड में) (यूहन्ना 5:24)।

(2) दुष्टता और अशुद्धता के अुनसार जीवन व्यतीत करने या धार्मिकता के अुनसार की अगुवाई में जीवन व्यतीत करना जो पवित्रता में अगुवाई करता है के परिणाम (रोमियों 6:19)।

इस प्रकार, पौलुस शिक्षा देता है कि कोई भी जन बिना प्रभु (स्वामी) के जीवन व्यतीत नहीं कर सकता! इस संसार में शायद ही कोई व्यक्ति हो जो वास्तव में, इस तरह से "स्वतन्त्र" या "स्वाधीन" हो, कि उस पर प्रभुता करने वाला कोई स्वामी या प्रभु नहीं है। हर एक जन पर कोई न कोई स्वामी जरूर होता है जिसकी अधीनता में होकर मनुष्य अपना जीवन व्यतीत करता है, चाहे वह "पाप" हो या "धार्मिकता"।

लेकिन प्रभु कहते हैं कि "पाप", मनुष्य को इस कदर मज़बूर करता है कि वह अपने शरीर को अधार्मिकता की सेवा करने के लिए हथियार के रूप में देता है। जिससे वह स्वयं "अधार्मिक" बन जाता है, जिसकी वजह से वह पाप का विरोध या प्रभु की आज्ञाओं का पालन नहीं कर पाता। इसका अर्थ हुआ कि वह परमेश्वर के वचनों के लिए पूरी तरह से "मर चुका है"।

परन्तु परमेश्वर मसीहियों को "धार्मिकता" के तहत अपने शरीर के अंगों को धार्मिकता के हथियार होने देने के लिए बुलाते हैं। जो हमारी अगुवाई "पवित्रता की ओर" करते हैं जिसके द्वारा वह पाप का सामना करके परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन कर सकता है।

जब एक मसीही को यह पता चलता है कि पाप या धार्मिकता की सेवा करने के क्या परिणाम होते हैं, तो वह अपने आप को लगातार यीशु मसीह की सेवा करने के लिए समर्पित कर देता है।

कदम 3. प्रश्न। व्याख्या

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?
आइये रोमियों 6:12-23 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें। (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

अध्याय 6

प्रश्न 1. **रोमियों अध्याय 6 पवित्रता के बारे में क्या सिखाता है?**

ध्यान दें।

(1) पवित्रता क्या है (नया मनुष्य बनना)?

पुराना मनुष्य। रोमियों 6:6 कहता है, "हमारा पुराना मनुष्य" या "हमारा पुराना जीव" यीशु मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया जा चुका है। इस क्रिया का काल यह दर्शाता है कि पुराना मनुष्यत्व अपनी संपूर्ण दशा में *हमेशा के लिए* मृतक हो चुका है। हमारा "पुराना मनुष्य" हमारे अंदर की अवस्था तथा बाहरी अवस्था में नये जन्म से पहले की दशा है। कुछ समय तक पुराने मनुष्यत्व को धीरे–धीरे मृतक अवस्था को प्राप्त करने के रूप में स्वीकार *नहीं* किया जाता है, लेकिन जब उसका नया जन्म हो जाता है तो उसे पूरी तरह से पुराने मनुष्य के लिए मरा हुआ मान लिया जाता है।

नया मनुष्य। "पवित्रता" (यूनानीः हागियास्मोस) "हमारे नए मनुष्य" को दर्शाती है और यह हमारी आंतरिक स्थिति और वह बाहरी स्थिति है जो हमारे *विश्वासी होने* का प्रमाण देती है। रोमियों 6:9 और 22 में, शब्द "पवित्रता" पवित्रता की प्रक्रिया का उल्लेख नहीं करता है जिसमें हमारा व्यवहार अधिक पवित्र हो जाता है, बल्कि पवित्रता की इस स्थिति में अपने नये जन्म के बाद मसीही व्यक्ति तुरंत और पूरी तरह से "पवित्र" (पाप से अलग और धार्मिकता के लिए समर्पित) हो जाता है "यीशु मसीह हमारी.... धार्मिकता है" (1कुरिन्थियों 1:30)। "पवित्रता के बिना कोई भी परमेश्वर को नहीं देख सकेगा" (इब्रानियों 12:14) (यूहन्ना3:3,7)। यह परमेश्वर द्वारा पाप का विरोध करने की दी गई क्षमता को दर्शाती है, पूरी ईमानदारी से उसकी आज्ञा को माने और नया जीवन जीएं। रोमियों अध्याय 6 में *ज़ोर पवित्रीकरण की प्रक्रिया पर नहीं है, लेकिन पवित्रता की स्थिति पर दिया गया है। लेकिन* ज़ोर पाप और पाप की शक्ति से सम्बन्ध को तोड़ने तथा धार्मिकता के प्रति क्षमता और प्रतिबद्धता पर दिया गया है।

(2) पवित्रता(नया मनुष्य बनने) का उद्देश्य क्या है?

नए मनुष्य बनने का उद्देश्य यह है कि आगे को उसके शारीरिक देह के अंग अब उसके पापी स्वभाव(पापी प्रवृत्ति) के प्रति प्रतिबद्ध और नियंत्रित में न हों और अब हमें अधर्म (पाप) की सेवा में हथियार या यंत्र के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जाए।

"पाप का शरीर" (रोमियों 6:6) हमारी शारीरिक देह है जिसको पापी प्रवृति द्वारा पाप की सेवा करने के लिए एक हथियार या साधन के रूप में निर्धारित, नियंत्रित और उसका दुरुपयोग किया जाता (जो अभी भी मसीहियों में मौजूद) है। रोमियों 6:6 के अनुसार हमारे "पुराने मनुष्य" (पुराने स्वभाव) को *हमेशा के लिए एक बार* क्रूस पर चढ़ाए जाने (मसीह के साथ मरना) का उद्देश्य "पाप से दूर करना" और "पाप की दासत्व को रोकना" है। हमारे पुराने स्वभाव का क्रूसित होना हमारे भौतिक शरीर के अंगों को हमारे पापी स्वभाव का दास होने से बचाता है। हथियार या उपकरण के तौर पर हमारे शारीरिक देह के अंग शक्तिहीन, अप्रभावी हो जाते हैं, यहां तक कि उनका अस्तित्व खत्म हो जाता है। पाप के शरीर को पहले ही विनाश की सजा दी जा चुकी है और यह सजा अब पवित्र आत्मा की शक्ति में नए और पवित्र जीवन जीने के माध्यम से लागू की जा रही है (रोमियों 8:13)।

जब कोई व्यक्ति (नया जन्म पाया हुआ) मसीही बन जाता है, तो उसका शरीर अब उसके पापी स्वभाव के द्वारा संचालित या उसके अधीन नहीं रहता, वरन उसे रोमियों 6:16 के अनुसार, अपने नये जन्म पाये हुई अवस्था के द्वारा संचालित या उसके अधीन होना चाहिए, अर्थात उसकी धार्मिकता

की स्थिति के (परमेश्वर की दृष्टि में उसको धर्मी ठहराये जाने और छुटकारा पायी हुई स्थिति) जो कि उसकी पवित्रता की स्थिति (पाप का प्रतिकार करने और परमेश्वर की आज्ञा मानने की क्षमता) में ही प्रकट होती है (रोमियों 6:18-19; गलातियों5:16-26)।

(3) जीवन में पवित्रता का क्या प्रमाण है ?

किसी व्यक्ति के एक नया (नया जन्म पाया हुआ) व्यक्ति बन जाने का प्रमाण यह है कि, वह पवित्रता की स्थिति में रहता है, अर्थात, उस अवस्था या स्थिति में जिसमें उसके पाप की शक्ति टूट गई है (मर गया) (रोमियों 6:2,7,11,14)।

मसीही दर्शाते हैं कि वह अब पुराने स्वभाव द्वारा संचालित अवस्था अर्थात अपने पापी स्वभाव के दास नहीं हैं (रोमियों 6:6) क्योंकिः

- वह मसीही दिखाता है कि "वह एक नया जीवन जी रहा है": विश्वासी, धर्मी और पवित्र (रोमियों 6:4)।
- वह खुद को पाप के लिए मृत और परमेश्वर के लिए जीवित गिनता है": एक मसीही जो परमेश्वर के शासन में और परमेश्वर की आज्ञा का पालन करता है (रोमियों 6:11)
- वह "परमेश्वर की सेवा में अपने शरीर के अंगों को हथियार या धार्मिकता के उपकरण के रूप में प्रदान करता है"(रोमियों 6:13,19)
- वह "पूरी तरह से शिक्षण के रूप का पालन करता है(यूनानीः टुपोस डिडाचेस) जिसे मसीह ने उसे सौंपा था"(रोमियों 6:17)।

(4) पवित्रता का उद्देश्य क्या है ?

रोमियों अध्याय 6 में सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा यह है कि, व्यवस्था नहीं, बल्कि धार्मिक और पवित्र जीवन जीने के लिए अनुग्रह आवश्यक है, अर्थात् नए मनुष्यत्व में होकर जीवन जीना (रोमियों 6:14)।

जो लोग "व्यवस्था के अनुसार" जीवन व्यतीत करते हैं उनमें आत्म-धर्मी या अपने आप को सही साबित करने वाली आत्मा होती है, जिसके कारण वे व्यवस्था का पालन करने का भरपूर प्रयास करते हैं और अपने आप को धर्मी ठहराते हैं (वे यह सुनिश्चित करते हैं कि वे व्यवस्था के कामों को पूरा कर रहें हों)। वे व्यवस्था का पालन इसलिए करना चाहतें है क्योंकि उन्हें डर है कि कहीं उन्हें परमेश्वर से सज़ा न मिले या वे अपने आप अपना उद्धार अर्जित करने या उसे एक पुरस्कार के रूप में प्राप्त करना चाहते हैं।

हालाँकि, जब लोग "अनुग्रह के अधीन" रह रहे होते हैं, तो वे गहराई से जानते हैं कि वे *पहले से ही* परमेश्वर की संप्रभुता और स्वतंत्र अनुग्रह से *धर्मी ठहरे हैं*, जो उन्होंने यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से प्राप्त किया है। परमेश्वर को मानने की उनकी प्रेरणा उनके लिए परमेश्वर का प्रेम है। उनका परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना है।

(5) पवित्रता की निश्चितता क्या है ?

एक मसीही जन का (नया जन्म पाने) नया मनुष्य होने का यकीन, अर्थात् पवित्रता की स्थिति में आना एक तरफ तो मसीह की 2000 साल पहले की *मृत्यु* और पुनरुत्थान पर आधारित है और दूसरी तरफ मसीह के साथ स्वयं मसीही व्यक्ति की मृत्यु व उसके पुनरुत्थान पर आधारित है, जो

तब हुआ जब उसने विश्वास किया था। जिस तरह मसीह की मृत्यु का निश्चित परिणाम उसका पुनरुत्थान था, उसी तरह पाप की शक्ति के लिए मसीही के मरने का निश्चित परिणाम एक नया, धर्मी और पवित्र जीवन है! यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान कुछ मसीहियों की धार्मिकता(धर्मी ठहराये जाने) और पवित्रता(पवित्रीकरण) का प्रतिपादन करता है! मसीही लोग मसीह की मृत्यु में हिस्सा इसलिए लेते हैं ताकि वे मसीह के पुनर्जीवित जीवन में साझा कर सकें। उनकी निर्णायक आध्यात्मिक मृत्यु और मसीह के साथ पुनरुत्थान के द्वारा, मसीही लोग चाहते हैं कि वे प्रभु के द्वारा दिए गए पुनर्जीवित जीवन *को जिएं* , वे जी *सकते हैं* और वे *जीएंगें* (रोमियों 6:8-11)! इसलिए, मसीहियों को केवल अपने आप को दास (रोमियों 6:13) के रूप में ही प्रभु को अर्पित नहीं करना *चाहिए,* बल्कि उनमें प्रभु की इच्छा (रोमियों 6:16) का पालन भी करना *चाह होनी चाहिए, वे* कर *सकते हैं* और वे *करेगें!* मसीही न केवल पालन करने के लिए बाध्य हैं, बल्कि वे अभी भी पूरी तरह से पवित्र प्रकृति के प्रतिरोध के बावजूद पालन करने के लिए बने हैं। वे अपनी शक्ति से आज्ञा नहीं मान सकते, लेकिन फिलिप्पियों 2:13 कहता हैः "क्योंकि परमेश्वर ही है, जिस ने अपनी सुइच्छा के निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है (रोमियों 8:30; फिलिप्पियों 1:6; 1पतरस 1:1-2)। इसलिए मसीहियों को यह आश्वासन है कि उनके पापी स्वभाव का भविष्य में उन पर कोई प्रभुत्व या नियंत्रण नहीं होगा, न तो अभी और न ही भविष्य में कभी! उनकी आत्मिक मृत्यु और मसीह के साथ पुनरुत्थान के द्वारा उन्हें परमेश्वर का अनुग्रह प्रदान किया गया है। सुनिश्चित जानें कि वे जो करना चाहते हैं उसे पूरा कर सकते हैं! विजय निश्चित है (रोमियों 8:31,37)। पाप के खिलाफ संघर्ष निराशाजनक नहीं है, क्योंकि पापी स्वभाव की शक्ति प्रभावी रूप से (पर्याप्त रूप से) टूट गई है। पवित्रता की विजय मसीह के पूर्ण उद्धार कार्य द्वारा सुरक्षित की गई है (यूहन्ना19:30)। यह वास्तव में अच्छी खबर है! यह सुसमाचार है!

6:17

***प्रश्न 2.* सिद्धांत (शिक्षण) के रूप (प्रतिरूप, उदाहरण) का पूरी तरह से पालन करने का क्या अर्थ है, जिसे मसीहियों को सौंपा गया था।?**

ध्यान दें।

(1) शिक्षा का यह रूप क्या है?

"शिक्षा का रूप" (ग्रीकः ट्यूपोस डिडाचेस) "मसीही शिक्षा का सीखना या मानक" है (इसके विषय और इसकी विधि दृष्टिकोण के संबंध में), जिसका उपयोग सभी प्रेरितों द्वारा किया गया था और इसे नए नियम में दर्ज किया गया था। यह मसीही सिद्धांतों को सिखाने का सही और निश्चित स्वरूप है (2तीमुथियुस 1:13)। यह विशेष रूप से रोमियों की पुस्तक में चित्रित किया गया है और प्रेरित पतरस के लिए भी जाना जाता है(2पतरस 3:12,14-16)। यह "सही और निश्चित स्वरुप या मसीही सिद्धांतों को सिखाने का प्रारूप" मसीहियों की सोच (सिद्धांत) और (व्यवहार) को नियन्त्रित करता है। उदाहरण के लिए यह, धर्मी ठहराये जाने और पवित्रीकरण की शिक्षा का एकमात्र सही तरीका है। यह मसीहियों के विश्वास और व्यवहार का संपूर्ण नियम है, अर्थात, सभी वे सिद्धांत जो दुनिया के सभी मसीहियों को विश्वास करना चाहिए और सभी मसीहियों अभ्यास करना चाहिए और विश्व के सभी मसीहों को पालन करना चाहिए।

प्रेरितों के काम 20:17-35 में, प्रेरित पौलुस कहते हैं कि यह परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार को बिना किसी हिचकिचाहट के गवाही देना और "परमेश्वर की संपूर्ण इच्छा" की घोषणा करना था।

उन्होंने उदाहरण के लिए सिखाया कि यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान, पश्चाताप करने की आवश्यकता और यीशु मसीह में विश्वास और परमेश्वर के राज्य से संबंधित चीजें, जैसे यीशु मसीह ने अपने सभी दृष्टांतों में की थी।

उदाहरण के लिए, उन्होंने सिखाया कि एक कलीसिया (मण्डली):

- प्राचीनों की एक परिषद के नेतृत्व में होनी चाहिए
- प्राचीनों को एक–दूसरे को देखना चाहिए
- प्राचीनों को मण्डली की देखरेख करनेवाले बिशप होने चाहिए
- विशेष रूप से झूठे शिक्षकों से बाइबल की सच्चाई को मोड़ने से बचने के लिए
- प्राचीनों को मण्डली का चरवाहा(पासबान) होना चाहिए
- विशेष रूप से कमजोर और जरूरतमंदों की देखभाल करने के लिए।

पौलुस ने उद्धार पाने का (धर्मी ठहराये जाने और शुद्धिकरण) का एकमात्र सही तरीका भी सिखाया (रोमियों 6:17)। मसीही आज "मसीही सिद्धांत या व्यवहार के रूप या स्वरुप" को सम्भवतः नजरअंदाज करने, बदलने या जोड़ने का काम नहीं कर सकते। (1कुरिन्थियों 4:6; 2कुरिन्थियों 4:2; प्रकाशितवाक्य 22:18–19)!

(2) मसीहियों को शिक्षण के इस रूप के अधीन किया जाता है।

पौलुस यह नहीं कहता है कि शिक्षा का यह सही और निश्चित रूप मसीहियों को सौंपा गया था, ताकि वे जैसा चाहे उस तरीके से इसकी व्याख्या और इसका पालन कर सकें। इसके विपरीत, इतिहास के सभी मसीहियों को सिद्धांत और जीवन (शिक्षा और अभ्यास) के इस सही और निश्चित रूप को सौंपा गया है! परमेश्वर ने एक पवित्र तरीके से विश्व के सभी मसीहियों और मनुष्यों के इतिहास में और बाइबल में बताए गए विश्वास और व्यवहार के पूरे नियम को उजागर किया। इसका तात्पर्य यह है कि परमेश्वर चाहते हैं कि मसीही लोग विश्वास करें और उसके उद्देश्य को पूरा करें। यह किसी के अधीन नहीं है और समय, परिस्थितियों या लोगों की अपनी व्याख्या पर निर्भर नहीं है। बाइबल की विषय वस्तु का आविष्कार या उसका तैयार किया जाना लोगों द्वारा नहीं किया गया है, बल्कि परमेश्वर द्वारा प्रकट किया गया है (1कुरिन्थियों 2:9–10)। मसीही सिद्धांत और व्यवहार की बात परमेश्वर द्वारा तय कि गयी थी न की किसी कलीसिया, परिषद या अगुवों द्वारा (उदाहरण के लिए, पोप)! एक संप्रभु तरीके से परमेश्वर ने मसीहियों को आज्ञा दी है कि उन्हें क्या विश्वास करना है और उन्हें कैसे जीना है। मसीही विश्वास करने और अभ्यास करने के लिए कुछ चीजों का चुनाव करके बाकि के निर्देशों की उपेक्षा नहीं कर सकते। मसीही लोग एक संप्रभु तरीके से "परमेश्वर की संपूर्ण इच्छा (योजना)" के अधीन हैं।

(3) मसीही सम्पूर्ण मन से इस शिक्षा को मानते हैं।

मसीहियों को निष्क्रिय रूप से एक स्वामी की अधीनता से दूसरे की अधीनता में स्थानांतरित नहीं किया गया था। रोमियों 6:16–17 के अनुसार, परमेश्वर ने एक संप्रभु तरीके से उनके अंदर पाप की शक्ति को तोड़ दिया, मसीहियों ने स्वेच्छा, ईमानदारी और खुशी से अपनी दासत्व को पाप के लिए त्याग दिया और खुद को परमेश्वर और परमेश्वर की आज्ञाकारिता के लिए दे दिया है! इसका तात्पर्य यह है कि जो मनुष्य यीशु मसीह को *उद्धारकर्ता* के रूप में ग्रहण करता है वह उसे *प्रभु या*

स्वामी के रूप में ग्रहण करता है! जो मनुष्य यीशु मसीह के पास धर्मी ठहराये जाने के लिए आता है वह शुद्धिकरण के लिए भी आता है! यीशु मसीह को अपनी धार्मिकता मानते हुए उसमें अपनी आस्था (विश्वास) रखने के आह्वान का पालन करना, और अपनी धार्मिकता के रूप में, उसकी संपूर्ण इच्छा के प्रति आज्ञाकारिता को प्रगट करता है (प्रेरितों. 20:27)! और जैसा कि बाइबल में बताया गया है परमेश्वर के प्रकट शैक्षिक सिद्धांत और अभ्यास के सही और निश्चित रूप हमारे सामने प्रगट होते हैं! मसीही सिद्धांत के इस सही और निश्चित रूप को समझने के लिए, मसीहियों को अधिकाई से बाइबल अध्ययन करना चाहिए और अपनी कलीसियाओं के अंदर बाइबल की कुछ यहां वहां बिखरी आयतों पर आधारित कलीसियाई सिद्धान्तों और विश्वास का अंगीकर करने के बजाय, बाइबल की सभी पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए।

6:19

प्रश्न 3. **मसीही लोग व्यवहारिक तौर पर अपनी देह के अंगों को किस प्रकार धार्मिकता की सेवा करने के लिए सौंप सकते हैं?**

ध्यान दें। पुराना और नया नियम दोनों ही पाप के खिलाफ लड़ाई में हमारी देह के अंगों और अन्य मानवीय चीजों को सौंपने के महत्व पर ज़ोर डालते हैं। आपकी देह के अंगों का सकारात्मक रूप में सौंपा जाना निम्न तरीके से होता है।

- नीतिवचन 4:23। सबसे अधिक अपने *मन* की रक्षा करें।
- नीतिवचन 4:26-27। केवल उन्हीं मार्गों का चुनाव करें जो दृढ़ हो और बुराई का मार्ग न हो।
- नीतिवचन 15:30। हमेशा अपना *चेहरे* को हंसमुख बनाये रखें जिससे लोगों को उससे खुशी प्राप्त हो सकें।
- नीतिवचन 19:20। सलाह सुनने और निर्देश स्वीकार करने के लिए अपने *कानों* का उपयोग करें।
- नीतिवचन 24:16। आप चाहे सात बार भी गिर जाएं, लेकिन हमेशा अपने *पैरों* का उपयोग दुबारा उठने के लिए करें।
- नीतिवचन 24:27। अपनी उच्च प्राथमिकताओं को पूरा करने के लिए अपने *हाथों* का उपयोग करें।
- नीतिवचन 24:32। अपनी *आंखों* का उपयोग निरीक्षण करने और सबक सीखने के लिए करें।
- नीतिवचन 25:15। अपने *मुंह* का उपयोग धैर्यपूर्वक और कोमलता से बोलने के लिए करें, जो बहुत प्रेरक है।
- फिलिप्पियों4:8। अपने *दिमाग* का उपयोग जो भी सच, नेक, सही, शुद्ध, प्यारा, प्रशंसनीय, उत्कृष्ट और प्रशंसनीय है, उसके बारे में सोचने के लिए करें।

चरण 4. लागू करना। **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 6:12-23 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

6:12. यीशु मसीह के आधिपत्य को प्रस्तुत करने के लिए एक प्रतिबद्धता बनाएं और अब अपने नश्वर शरीर में अपने पापी स्वभाव को राज्य करने की अनुमति न दें। अब अपने पापी स्वभाव की बुरी इच्छाओं का पालन न करें।

6:13,19. अपने शरीर के अंगों (अपने मन, हृदय, आंख, कान, जीभ, हाथ, पाँव, आदि) को ऐसे उपकरणों के रूप में पेश करने की प्रतिज्ञा करें जो परमेश्वर की दृष्टि में सही और पवित्र हैं।

6:14. "व्यवस्था के अधीन" जीवन न बिताने का निर्णय लें, अर्थात, अपने आप को बचाने के लिए या व्यवस्था के नियमों का पालन करने के लिए अपनी शक्ति में प्रयास करना, उदाहरण के लिए, किसी विशेष दिन पर आराधनालय, कलीसिया या मस्जिद में जाना, धार्मिक परंपराओं का पालन करना (जैसे अनुष्ठान प्रार्थना, उपवास और पैसे देने की तरह) और धार्मिक वस्त्र पहनना जो किसी व्यक्ति को दूसरे से अलग करते हैं, या विशेष धार्मिक त्यौहार मनाना, और भोजन संबंधी धार्मिक नियमों का पालन करने पर मानते हैं कि ऐसा करने से वे अपने परिवार के लोगों या दूसरों से ऐसे काम करवाने के द्वारा अपने "परमेश्वर" को प्रसन्न करते हैं। बल्कि आप इसके बजाय आप "अनुग्रह के अधीन" जीना शुरू करें, अर्थात, इस तथ्य पर निर्भर करना कि आप पहले से ही यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से परमेश्वर के अनुग्रह द्वारा बचाये गए हैं। परमेश्वर ने आपको पहले से ही धार्मिकता का राज्य दिया है, अर्थात, उसने आपको पहले से ही धर्मी घोषित कर दिया है और इसलिए आपको पूरी तरह से धर्मी मानता है! और परमेश्वर ने आपको पहले से ही पवित्र ठहरा दिया है, अर्थात, उसने आपको पाप का विरोध करने और उसे न मानने की क्षमता दी है। परमेश्वर के आत्मिक बालक के रूप में, आप पहले से ही परमेश्वर के सबसे अनुकूल रिश्ते में खड़े हैं। परमेश्वर के अनुग्रह का आनंद लें और नए जीवन को जीने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह का लगातार उपयोग करें, अर्थात, अपने शरीर के अंगों को परमेश्वर की धार्मिकता और पवित्रता के साधन के रूप में पेश करें।

6:16. यह महसूस करें कि वह व्यक्ति जो अपने पापी स्वभाव की बुरी इच्छाओं का पालन करने के लिए खुद को अपने पापी स्वभाव के अधीन करता है, वह अभी भी अपने पापी स्वभाव का दास है। पापी स्वभाव का पालन करना मृत्यु की और ले जाता है (रोमियों 6:23अ)।

6:17. "सिखाने के प्रारूप" का पालन करें, जिसे सभी मसीहियों को सौंपा गया है। जिसका अर्थ है कि आप, मसीही सिद्धांतों की शिक्षा देने के सही और निश्चित स्वरुप को जानें और मानें, जो मसीहियों की सोच और व्यवहार को बदल देते हैं। उदाहरण के लिए, रोमियों अध्याय 6 हमें धर्मी ठहराये जाने और शुद्धिकरण का एकमात्र सही तरीका सिखाता है।

2. रोमियों 6:12-23 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैंने अपना जीवन परमेश्वर की महिमा के लिए नया, धार्मिक और पवित्र जीवन जीने के लिए प्रतिबद्ध किया है।

मैं सिद्धांतों के मसीह शिक्षण के सही और निश्चित रूप को सीखने का अधिकाई से प्रयास करना चाहता हूं। मुझे अहसास है कि रोमियों की पुस्तक, परमेश्वर की इच्छा के शिक्षण के सही और निश्चित रूप का बाइबल में सबसे अच्छे उदाहरणों में से एक है। इसीलिए मैं अपने लिए रोमियों की पुस्तक का अध्ययन करना जारी रखूंगा और हर जगह अन्य मसीहियों को भी रोमियों की पुस्तक पढ़ाता रहूंगा।

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 6:12-23 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(निर्धारित कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 6:12-23 का प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन संहिता 84,90,91 और 92** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।

4. स्मरण करना। (1) **परमेश्वर अतुलनीय हैः यशायाह 40:25-26।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। मत्ती 15:14 में निहित **"अंधे की अगुवाई करनेवाले" का दृष्टांत** और मत्ती 7:24-27 में **"बुद्धिमान और मूर्ख घर बनाने वाले" के दृष्टांत** की तैयारी करें। दृष्टांत का अर्थ समझाने के लिए छः निर्देशों का पालन करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।